Shri Yamunashtakam 8

श्रीयमुनाष्टकम् ८

Document Information

Text title : yamunAShTakam 8

File name : yamunAShTakam8.itx

Category : devii, nadI, aShTaka, devI

Location : doc_devii

Author : hitaharivaMshachandragosvAmi

Proofread by : NA

Latest update : January 15, 2019

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanskript**.

September 17, 2023

sanskritdocuments.org

श्रीयमुनाष्टकम् ८

व्रजाधिराज-नन्दनाम्बुदाभ-गात्र-वन्दना-
नुलेप-गन्ध-वाहिनीं भवाब्धि-बीज-दाहिनीम् ।
जगत्त्रये यशस्विनीं लसत्सुधी-पयस्विनीं
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहमञ्जरीम् ॥ १॥

रसैक-सीम-राधिका-पदाब्ज-भक्ति-साधिकां
तदङ्ग-राग-पिञ्जर-प्रभात-पुञ्ज-मञ्जुलाम् ।
स्वरोचिषाति-मञ्जुलां कृताजनाधिगञ्जनां
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहमञ्जरीम् ॥ २॥

व्रजेन्द्र-सूनु-राधिका-हृदि प्रपूर्ण-मानयो-
र्महा-रसाब्धि-पूरयोरिवातितीव्र-वेगतः ।
बहिः समुच्छलन्-नव-प्रवाह-रूपिणीमहं
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहमञ्जरीम् ॥ ३॥

विचित्र-रत्न-बद्ध-सत्तट-द्वय-श्रियोज्ज्वलां
विचित्र-हंस-सारसाद्य्-अनन्त-पक्षि-सङ्कुलाम् ।
विचित्र-हैम-मेखलां कृतातिदीन-पालनां
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहमञ्जरीम् ॥ ४॥

वहन्तिकां प्रियां हरेर्महा-कृपा-स्वरूपिणीं
विशुद्ध-भक्तिमुज्ज्वलां परे रसात्मिकां विदुः ।
सुधा-स्रुतिं त्वलौकिकीं परेश-वर्ण-रूपिणीं
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहमञ्जरीम् ॥ ५॥

सुरेन्द्र-वृन्द-वन्द्यया रसादधिष्ठते वने
सदोपलब्धि-माधवाद्भुतौक-सद्रसोन्मदाम् ।
अतीव विह्वलामिवोच्चलत्तरङ्ग-दोर्लतां
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहमञ्जरीम् ॥ ६॥

प्रफुल्ल-पङ्कजाननां लसन्-नवोत्पलेक्षणां
रथाङ्ग-नाम-युग्मक-स्तनीमुदार-हंसकाम् ।
नितम्ब-चारु-रोधसं हरेः प्रियां रसोज्ज्वलां
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहमञ्जरीम् ॥ ७॥

समस्त-वेद-मस्तकैरगम्य-वैभवां सदा
महा-मुनीन्द्र-नारदादिभिः सदैव भाविताम् ।
अतुल्य-पामरैरपि श्रितां पुमर्थ-सारदां
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहमञ्जरीम् ॥ ८॥

य एतदष्टकं बुधस्त्रिकालमाद्रितः पठेत्
कलिन्द-नन्दिनीं हृदा विचिन्त्य विश्व-वन्दिताम् ।
इहैव राधिका-पतेः पदाब्ज-भक्तिमुत्तमाम्
अवाप्य स ध्रुवं भवेत्परत्र तुष्टयानुगः ॥

इति श्रीमद्धित-हरिवंश-चन्द्र-गोस्वामिना विरचितं
यमुनाष्टकं सम्पूर्णम् ।

Shri Yamunashtakam 8

pdf was typeset on September 17, 2023

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*